VETERINARY TODAY INTERNATIONAL
ISSN 2583-8288

गाभिन पशु और नवजात बछड़े / बछिया की देखभाल

डॉ.उपासना चंद्राकर , डॉ.नेहा पूरे , डॉ.सच्चिदानंद सरकार

doi.org/10.5281/VeterinaryToday.21110379

गाभिन पशुओं की विशेष देखभाल बहुत जरुरी है | गाभिन पशुओ के गर्भ का विकास छठवे से सातवें माह के दौरान तेजी से होता है | 6 -7 माह के गाभिन पशु को चराने के लिए ज्यादा दूर तक एवं उबड़ खाबड़ रास्तो पर नहीं ले जाना चाहिए | गर्भावस्था के 7 वें महीने के बाद दूध निकालना बंद कर देना चाहिए, ताकि शरीर में कैल्शियम और अन्य पोषक तत्वों का स्तर बना रहे | | गाभिन पशु के उठने बैठने के लिए पर्याप्त स्थान होना चाहिए | गाभिन पशु के बांधने का स्थान पीछे की ओर ढलान नहीं होना चाहिए | गाभिन पशु को पीने के लिए 70 -80 लीटर प्रतिदिन स्वच्छ पानी उपलब्ध कराना चाहिए | पशु के पहली बार गाभिन होने पर 6 -7 माह के बाद उसे अन्य दूध देने वाले पशुओ के साथ बांधना चाहिए और पीठ और थन की मालिश करनी चाहिए |

गाभिन पशुओं के दैनिक आहार की जरूरतें

आहार अवयव	मात्रा
हरा चारा	15-20 किलो
सूखा चारा	4-5 किलो
खली	1 किलो
मिश्रित पशु आहार	2-3 किलो
खनिज मिश्रण	50 ग्राम
नमक	30 ग्राम

प्रसव के समय (Calving)और प्रसव के बाद पशु की देखभाल

ब्याने के 4 -5 दिन पूर्व पशु को अलग स्वच्छ स्थान पर बांधना चाहिए | पशु के बैठने के लिए पैरा बिछाकर रखें एवं उठने बैठने हेतु पर्याप्त स्थान होना चाहिए | ब्याने के 1 -2 दिन पहले से पशु पर लगातार नज़र रखना चाहिए | जब पशु बच्चे को जन्म देने लगे, तो अत्यधिक जल्दबाज़ी या जोर न लगाए | यदि प्रसव में कोई कठिनाई हो, तो स्वयं प्रयास करने के बजाय तुरंत पशुचिकित्सक की मदद ले |

नवजात बछड़े / बछिया की देखभाल

जन्म के तत्काल बाद बछड़े की नाक और मुँह साफ़ करें | माँ को बछड़े को चाटने दें , जरुरत हो तो साफ कपड़े से पोछ दें | नाल को २ इंच की दूरी पर साफ़ धागे से बांध दे और बची हुयी नाल को साफ़ कैंची से काटकर उस पर टिंचर आयोडीन लगायें जिससे की नाल के संक्रमण को रोका जा सके |

कोलोस्ट्रम (खीस)- जन्म के आधा घंटे के भीतर नवजात बछड़े को खीस पिलायें | खीस की मात्रा बछड़े के वजन के 1 /10 th भाग के बराबर होनी चाहिए जिसे दिन में 3 -4 बार बाटकर देना चाहिए |

कोलोस्ट्रम (खीस) का महत्व

बछड़े को जन्म देने के बाद गाय द्वारा दिया जाने वाला पहला गाढ़ा , पीले रंग का दूध होता है | इसे आम बोलचाल में "खीस " भी कहा जाता है | यह नवजात बछड़े की रोग -प्रतरोधक क्षमता बढ़ाने और उसे बीमारियों से बचाने के लिए अमृत समान माना जाता है |

- **उच्च पोषण** - इसमें सामान्य दूध की तुलना में बहुत अधिक प्रोटीन , विटामिन (A,D, E) और मिनरल्स होते हैं |
- **एंटीबॉडी से भरपूर** - यह एंटीबॉडी और इम्युनोग्लोबुलिन (IgG)से भरपूर होता है , जो बछड़े को जन्म के शुरुआती दिनों में वायरस और बैक्टीरिया से लड़ना सिखाते है |
- **पाचन तंत्र का विकास** - यह बछड़े के पेट का साफ़ करने में मदद करता है और आंतो के स्वास्थ्य को बढ़ावा देता हैं |
- **मानवीय उपयोग** - गाय के कोलोस्ट्रम का पाउडर या सप्लीमेंट इंसानो द्वारा भी लिया जाता है , क्योकि यह इंसानो में भी immunity (रोग -प्रतिरोधक) क्षमता बढ़ाने , गट हेल्थ को सुधारने में भी सहायक है |

Deworming (कृमिनाशक दवापन)

- नवजात बछिया /बछड़े को प्रथम कृमिनाशक दवा 15 दिन की उम्र देनी चाहिए |
- उसके बाद 6 माह की उम्र तक प्रत्येक माह कृमिनाशक दवा पिलाना चाहिए |

टीकाकरण - प्रारंभिक रोग रोकथाम

जब बछड़े 3 माह के हो जाएं तब उनका टीकाकरण शुरू कर देना चाहिए |

थेलेरियोसिस	3 माह में
खुरपका मुंहपका /खुरहा चपका	4 माह में
गलघोंटू	6 माह में
एकटंगिया	6 माह में
ब्रूसेलोसिस	4-8 माह (केवल बछिया में)